DR. SUMAN LAL RAY
Guest Assistant Professor
Deptt. of Sanskrit
S.R.A.P. College, Bara Chakia
BRABU— Muzaffarpur

B.A. (Hons.) Part — III
Sub. — Sanskrit
Paper — VII
Short Notes

5×4 = 20 Marks.
[redacted]

## अलङ्कारों के सोदाहरण लक्षण—

### 12. व्याजस्तुति अलङ्कार

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि जहाँ आरम्भ में निन्दा और अन्त में स्तुति प्रतीत हो अथवा प्रारम्भ में स्तुति और अन्त में निन्दा हो, वहाँ व्याजस्तुति अलङ्कार होता है। आचार्य मम्मट ने व्याजस्तुति का लक्षण इस प्रकार से निर्धारित किया है—

"व्याजस्तुतिर्मुखे निन्दा स्तुतिर्वा रूढिरन्यथा।" (मम्मट)

अर्थात् जहाँ निन्दा का पर्यवसान स्तुति में और स्तुति का पर्यवसान निन्दा में हो, उसे व्याजस्तुति अलङ्कार कहते हैं। प्रथम उदाहरण—

"त्यक्त्वा राज्यं गिरमनुसरन् स्त्रीवशान्मूढबुद्धे
रासो भ्रान्त्वा गहनविपिने घातयन् मुग्धकान्ताम्।
सख्यं [redacted] बद्ध्वा कपिभिरसमं लङ्घयन् कीर्तिमग्र्यां
पूर्वेषां वो विलयमनयो हेमलङ्कां किमेतत् ?॥"

यहाँ स्त्री के वशीभूत मूढबुद्धि राजा की वाणी का अनुसरण करते हुए राज्य छोड़कर गहन विजन में जाकर अपनी मुग्धा पत्नी को छुड़वाकर बानरों के साथ विषम मित्रता करके पूर्वजों के कीर्तिसागर का नाश करके तथा सोने की लंका को विध्वस्त करके आपने क्या किया? यह सब क्या है? — इस प्रकार प्रारम्भ में मूढबुद्धि राजा की वाणी का अनुसरण आदि निन्दा जैसी प्रतीत होती है, किन्तु अन्त में सागर को पारकर दुःसह प्रतापी वनितापहारी रावण को मारकर और स्वर्णलंका को ध्वस्त करके आपने अति दुष्कर कार्य किया, इस स्तुति में उसका पर्यवसान होता है। अतः यहाँ व्याजस्तुति है।

दूसरा उदाहरण— "युक्तं तवैतद् रघुवंशभूपते! सतां हि सत्कुः परिपालनं व्रतम्
इतः स्तुतिः का जगदीश! निर्मला भवान् यदर्थं न्यवधीन्निरागसम्॥"

यद्यपि मित्रों की रक्षा करना सज्जनों का व्रत है,— इसके द्वारा आरम्भ में स्तुति होती है, किन्तु अन्त में— 'आपने कुब्ज निरपराध को मारकर क्या प्राप्त किया— इत्यादि रूप में यह स्तुति निन्दा में पर्यवसित होती है। अतः यहाँ व्याजस्तुति अलङ्कार है।

क्रमशः जारी